International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 03(II), July - September, 2022, pp. 205-210

भारतीय राजनीतिक चिन्तन में जयप्रकाश नारायण की समग्र क्रांति की अवधारणा

डॉ. विक्रम सिंह*

प्रस्तावना

जय प्रकाश नारायण का जन्म अक्टूबर 1902 को गंगा और सरयू के संगम पर बसे हुये गांव सिताबदियारा में हुआ था। जयप्रकाश अपने पिता हर्षुदयाल और माँ फूलरानी की चौथी सन्तान थे। हर्षुदयाल का रहन सहन सादा और संस्कार युक्त था। अंग्रेजी सरकार की नौकरी में रहते हुए भी उनके जीवन और दृष्टिकोण में राष्ट्रीयता को स्थान प्राप्त था। इस प्रकार जयप्रकाश को स्वभाव की सादगी और राष्ट्रीयता की भावना विरासत में मिली।

जयप्रकाश नारायण आधुनिक भारत के ऐसे विशिष्ट राष्ट्रीय नेताए वं चिन्तन थे जिन्हें भारत में लोकतान्त्रिक समाजवादी विचारधारा के प्रसार के साथ ही सर्वोदय की विचारधारा को लोकप्रिय बनाने का श्रेय माना जाता है। किन्तु उनके चिन्तन एवं कृतित्व का सर्वोत्कृष्ट रूप उनकी सम्पूर्ण क्रांति की धारणा में प्रकट हुआ, जिसके द्वारा उन्होंने भारतीय लोकतंत्र में राजसत्ता के उपर लोकसत्ता की श्रेष्टता को प्रमाणित किया और श्रद्धानवत भारतीय जनता ने अपने इस प्रिय नेता जे.पी. 'लोकनायक' के सम्मान से विभूषित किया।

क्रांति की अवधारणा

जयप्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रांति की अवधारणा प्रस्तुत की है। उनके चिनतन की एक आधारभूत विशेषता सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में व्याप्त अन्याय एवं शोषण का विरोध करना और एक ऐसी नैतिक एवं आदर्श व्यवस्था की स्थापना करना है जो व्यक्ति एवं समाज दोनों के हित में है। वह समाज के प्रत्येक अंग व प्रत्येक पक्ष को स्पर्श करेगी तथा उसमें परिवर्तन की प्रक्रिया को वांछित परिणति तक ले जाने का संकल्प होगा। यह समग्र इस अर्थ में होगी कि वह व्यक्ति के समग्र जीवन को भी आन्दोलित करेगी। जयप्रकश ने कहा कि समग्र क्रांति में व्यक्ति और समाज दोनों में सर्वांगीण परिवर्तन लाने की सामर्थ्य निहित होगी।

जयप्रकाश ने स्पष्ट किया कि सम्पूर्ण क्रांति की धारणा का प्रतिपादन करते समय उनका उद्देश्य विद्यमान विकृत व्यवस्था को आमूल समाप्त करना ही नहीं है, अपितु उसके माध्यम से वे एक नवीन वैकल्पिक व्यवस्था की सटीक योजना भी प्रस्तुत करना चाहते थे।

समग्र क्रांति की रूपरेखा

जयप्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण क्रांति की परिधि में 7 आयामों को सम्मिलित किया – नैतिक व आध्यात्मिक क्षेत्र में क्रांति, बौद्धिक क्षेत्र में क्रांति, सामाजिक क्रांति, आर्थिक क्रांति, राजनीतिक क्रांति, सांस्कृतिक क्रांति, वैचारिक, शैक्षणिक क्रांति। यह स्पष्ट है कि सम्पूर्ण क्रांति की परिधि में उनके द्वारा सम्मिलित किये गये आयाम समाज व मानव जीवन के प्रत्येक महत्वपूर्ण अंग को स्पर्श करते हैं।

* सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, परिष्कार कॉलेज ऑफ ग्लोबल एक्सीलेंस, जयपुर, राजस्थान।

- **सम्पूर्ण क्रांति के नैतिक और आध्यात्मिक आयाम –** जय प्रकाश का मत है कि सम्पूर्ण क्रांति के लिए लोगों की मानसिक संरचना और जीवन दृष्टि में मौलिक परिवर्तन अत्यन्त आवश्यक है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि समग्र क्रांति जीवन के 'साध्य के विषय में एक ऐसे दृष्टिकोण का पोषण करती है जिसमें मनुष्य के भौतिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति को एक साथ सुनिश्चित किया जाना चाहिए। जयप्रकाश नारायण ने मानव के ऐसे दृष्टिकोण की कल्पना की जिसमें भौतिक आवश्यकताओं को तो आवश्यक माना ही इसके साथ–साथ भौतिक आवश्यकताऐं ही सर्वोपरि न हो अपितु आध्यात्मिक लक्ष्य की संकल्पना प्रत्येक गतिविधि व उसकी इच्छा को मर्यादित भी करे। जयप्रकाश ऐसे जीवन की कल्पना करते हैं जिसके अनुसार अभावों और विलासिता दोनों पर निषेध है। जयप्रकाश का मत है कि मनुष्य के भौतिक विकास पर नैतिकता और आध्यात्मिकता का विवेक–सम्मत अंकुश रहना चाहिए।[1]

जयप्रकाश ने सामाजिक जीवन के सम्पूर्ण क्षेत्रों में परिवर्तन के लिए मनुष्य के दृष्टिकोण में पारस्परिकता और मनुष्य मात्र की अविार्य सम्बद्धता की आध्यात्मिक आस्था का चरितार्थ होना आवश्यक माना उन्होंने सामान्यतः लौकिक समस्याओं के लिए आध्यात्मिक तर्कों का प्रयोग नहीं किया, किन्तु उन्होंने दूसरों के दुःख से दुःखी होने और पीड़ित व्यक्तियों की सेवा के लिए स्वयं कष्ट सहकर भी तत्पर हो जाने को 'धर्म' मानने वाली आध्यात्मिकता को सामुदायिक जीवन की अनिवार्य शर्त माना।[2] उन्होंने कहा कि एक दूसरे के लिए त्याग करने की प्रवृति अपने सुखों को दूसरे के साथ बाँटने की भावना और दूसरों के दुःख में अधिकार पूर्वक हिस्सा चाहने की प्रवृत्ति ही सच्ची आध्यात्मिक साधना है, तथा यही सर्वोच्च मानवीय और सामाजिक मूल्य भी है।[3] इसी अर्थ में वे मानवीय मूल्य और आध्यात्मिकता को पर्यायवाची मानते थे। महात्मा गांधी की भांति जयप्रकाश ने स्वीकार किया कि मनुष्य के अन्तःकरण में क्रांति का सूत्रपात किये बिना समाज में क्रांतिकारी परिवर्तनों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। उन्होंने कहाा कि ''मनुष्य में जो लोभ, मोह, और स्वार्थ है उसकी जड़े उखाड़ने से ही वास्तविक क्रांति हो सकेगी।''[4]

- **समग्र क्रांति का सामाजिक अर्थ –** जयप्रकाश ने सम्पूर्ण क्रांति के माध्यम से एक ऐसे न्यायनिष्ठ समाज की रचना के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की जिसमें छुआछूत का उन्मूलन हो, बूरे रिवाजों और बूरी प्रथाओं को तिलांजलि दे दी जाय तथा जातिवाद को पूर्णतः नकार दिया जाये।

सामाजिक क्रांति की धारणा में वे समाज के विभिन्न वर्गों की समानता तथा स्त्रियों और पुरूषों की समानता को अनिवार्य रूप से सुनिश्चित करना चाहते थे। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि समाज में क्रांतिकारी परिवर्तनों का सूत्रपात पारिवारिक जीवन से जुड़े हुए छोटे–बड़े सभी सन्दर्भों में होना चाहिए। उनका मत है कि देश की युवा–पीढ़ी यदि केवल सामाजिक न्याय जैसे व्यापक प्रश्नों पर परिवर्तन के नारे लगाती रहे, तथा दहेज का प्रतिरोध; विवाह के विषय में युवक और युवतियों के आत्मनिर्णय के अधिकार की मान्यता आदि प्रसंगों की उपेक्षा करती रहे, तो सामाजिक परिवर्तन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।[5]

उन्होंने बल दिया कि सम्पूर्ण क्रांति में समाज की ऐसी सभी कुरीतियों और कुसंस्कारों के विरूद्ध संघर्ष की आवश्यकता होगी जिनके कारण विवाह के पवित्र संस्कारों को 'बाजार' की वस्तु बना दिया गया है, तथा दहेज का लेनदेन व विवाहों में ऐश्वर्य का प्रदर्शन सामाजिक प्रतिष्ठा का मापदण्ड मान लिये गये हैं। उन्होंने ऐसी प्रवृतियों के विरूद्ध विद्रोह की आवाज उठाने के लिये युवा–पीढ़ी को जागरूक किया तथा इसके लिए युवक–युवतियों का, 'प्रहलाद' की तरह अपने माता पिता के विरूद्ध भी 'सत्याग्रह' के लिए तैयार होने का आह्वान किया।[6]

- **सम्पूर्ण क्रांति का शैक्षणिक संदर्भ –** लोकनायक ने शिक्षा के क्षेत्र में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता व्यक्त की। उन्होंने विद्यमान शिक्षा प्रणाली को 'सड़ी–गली' और 'निकम्मी' प्रणाली की संज्ञा दी इस बात को विडम्बना बताया कि स्वतंत्रता के पश्चात से शिक्षा प्रणाली में परिवर्तनों की आवश्यकता सभी ने महसूस की है, किन्तु इस दिशा में प्रयास नगण्य रहे हैं।[7]

उन्होंने विद्यमान शिक्षा प्रणाली के स्थान पर ऐसी शिक्षा प्रणाली अपनाने का आग्रह किया जो विद्यार्थियों में चारित्रिक दृढ़ता, नैतिक विकास, श्रम के गौरव और आत्मनिर्भरता को सुनिश्चित कर सके। उन्होंने उपाधियों और रोजगार के सम्बन्ध को समाप्त करने की आवश्यकता प्रतिपादित की और कहा कि डिग्री व रोजगार के सम्बन्ध को विच्छेद किये बिना कोई मौलिक परिवर्तन नहीं किया जा सकता।[8] उन्होंने ऐसी व्यवस्था अपनाने पर बल दिया जिसमें न्यूनतम शिक्षा सबको मिल सके और अज्ञान व निरक्षरता को पूरी तरह से नष्ट किया जा सके।

जयप्रकाश ने शिक्षा की ऐसी पद्धति को उपयोगी माना जिसमें विद्यार्थियों का स्वतंत्र विवेक तथा किसी भी प्रश्न पर बुद्धि पूर्वक निर्णय करने की क्षमता विकसित हो। उन्हांने शिक्षा के सारे तंत्र को इस आधार पर पुनर्गठित करने की आवश्यकता बताई जिससे उसका सीधा सम्बन्ध देश की समस्या में स्थापित हो सके।[9]

- **सम्पूर्ण क्रांति का आर्थिक सन्दर्भ –** लोकनायक के अनुसार आर्थिक विकास का लक्ष्य मनुष्य का 'सुख' और आरोग्य होना आवश्यक है। उन्होंने माना कि आर्थिक प्रणाली की सतर्कता इस तथ्य में निहित है कि प्रत्येक वयस्क व्यक्ति को रोजगार और प्रत्येक व्यक्ति को न्यूनतम जीवन स्तर की प्रत्याभूति हो।[10]

उन्होंने देश की आवश्कयताओं के अनुरूप बड़े उद्योगों और लघु व कुटीर उद्योगों को संतुलित रूप से विकसित किये जाने की अपेक्षा की। उन्होंने बड़े उद्योगों और देश की रक्षागत आवश्यकताओं तथा आर्थिक व्यवस्था के मूलभूत ढाँचे का निर्माण करने तथा परिसीमित किये जाने की आवश्यकता बताई और इस बात पर बल दिया कि ''औद्योगिक विकास का प्रवाह मध्यम कद के उद्योगों, लघु उद्योगों और ग्रामोद्योग को खड़ा करने की दिशा में हो।''[11] उन्होंने विज्ञान की खोजों और तकनीकि उन्नति का उपयोग इस रीति से करने की आवश्यकता बताई जिससे साधनों का केन्द्रीकरण न हो, अपितु जनता का अधिकतम कल्याण सुनिश्चित हो।

जयप्रकाश ने आर्थिक क्षेत्र में ऐसे आत्मानुशासन को आवश्यक माना जिससे कि उद्योगों के स्वामी और श्रमिक उपभोक्ता ग्राहकों, समाज और देश के हितों की देखभाल करने वाले 'ट्रस्टी' के रूप में कार्य करें।[12] उन्होंने कहा कि यदि निजि उद्योग अपने सामाजिक दायित्वों को समझने और उनके अनुरूप अपनी मर्यादाताओं को स्वयं निर्धारित करने के लिए तत्पर हो तो उन पर से 'कन्ट्रोल और लाइसेंस जैसे अनावश्यक अंकुश हटा लिये जाने चाहिए।[13]

उद्योगों के सामाजिक दायित्वों के प्रति सजग व मर्यादित प्रबंधन का सुनिश्चित करने के लिए उद्योगों की व्यवस्था में श्रमिकों की भागीदारी को एक उपयोगी बताया।[14]

उन्होंने उद्योगों के विकास के क्रम में पर्यावरण की संरक्षा और प्रदूषण को नियन्त्रित करने के लिए विशेष सावधानी बरतने पर भी बल दिया।[15]

जयप्रकाश नारायण ग्राम जीवन के पुर्नसंगठन के पक्ष में थे वे चाहते थे कि गांवों को स्वायत तथा स्वावलम्बी इकाइयाँ बनाया जाय। इसके लिए भूमि संबंधी कानूनों में आमूल सुधार करने की आवश्यकता थी। भमि पर वास्तविक किसान का स्वामित्व होना चाहिए।[16]

जयप्रकाश नारायण ने सहकारी खेती का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि वास्तविक समाधान यह है कि उन सभी निहित स्वार्थों का उन्मूलन कर दिया जाए जिससे किसी भी रूप में भूमि जोतने वालों का शोषण होता है, किसानों के सभी ऋणों को निरस्त कर दीजिए, जोतों को एकत्र करके सहकारी और सामुहिक फार्मों की तथा राजकीय और सहकारी ऋण व्यवस्था तथा हाट व्यवस्था और सहकारी सहायक उद्योगों की स्थापना कीजिए।[17]

उनका कहना था कि सहकारी प्रयत्नों के द्वारा ही कृषि तथा उद्योगों के बीच सन्तुलन कायम किया जा सकता है।[18]

एशिया की मुख्य आर्थिक समस्या कृषक पुनःनिर्माण की है। उत्पादन के साधनों का समाजीकरण करना निश्चित रूप से अतिआवश्यक है। राज्य को अपने निजी उद्योगों की स्थापना करनी है तथा आर्थिक प्रसार के अन्य उपाय करने हैं। किन्तु कृषि को उसकी वर्तमान अवस्था में छोड़ देना उचित नहीं है।

जयप्रकाश नारायण कृषि के वर्तमान व्यक्तिवादी संगठन को हानिकारक तथा अपव्ययपूर्ण मानते थे। उनका कहना था कि कृषि क्षेत्र में उत्पादन की वृद्धि सहकारी तथा सामुहिक खेती के द्वारा ही सम्भव हो सकती है।[19]

समाजवादी होने के नाते जयप्रकाश नारायण आर्थिक समस्याओं को प्राथमिकता देते थे इसलिए उनका आग्रह था कि देश की आर्थिक समस्याओं को तुरन्त हल किया जाए।

जयप्रकाश के अनुसार आर्थिक क्रांति का मूल उद्देश्य एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण करने में है जिसमें सभी को उन्नति के लिए समान अवसर प्राप्त हो। साधनों के अभाव में किसी की प्रतिभा कुंठित न हो तथा आर्थिक असमानताओं का उन्मूलन कर एक वर्गहीन समाज की रचना की जा सके।

संपूर्ण क्रांति का राजनीतिक संदर्भ

जयप्रकाश के अनुसार राजनैतिक क्षेत्र में राजभक्ति पर लोक शक्ति की निर्णायक प्रतिष्ठा की आवश्यकता है। उन्होंने राजनैतिक प्रणाली में ऐसे परिवर्तन की आवश्कयता बताई जो राजनीतिक को सत्ता और महत्वाकांक्षा की पूर्ति कमे साधन की अपेक्षा मानव कल्याण की साधना को माध्यम बनाये। उन्होंने विद्यमान राजनीतिक प्रणाली में दलगत, संकीर्णता, स्वार्थवृत्ति तथा सत्ता केन्द्रीकरण की प्रवृत्तियों की कठोर निन्दा की। उन्होंने आस्था प्रकट की कि सम्पूर्ण क्रांति के माध्यम से एक नवीन प्रकार की राजनीतिक प्रणाली का बीजारोपण होगा। उन्होंने कहा कि ''इस व्यवस्था में राजनीति का भवन ऊपर से नहीं अपितु नीचे से रखा जाय, केन्द्र से नहीं अपितु गांव–गांव और मौहल्ले–मौहल्ले से उसकी चुनाई हो। इसके लिए किसी एक नए पक्ष की तख्ती भर टांग देना पर्याप्त नहीं होगा। राजनीति के रंगमंच पर किसीएक नवीन नेता का अवतरण भी इसके लिए पर्याप्त सिद्ध नहीं होगा। यह लोकनीति तो लोक शक्ति के गर्भ से ही उत्पन्न होगी।[21]

जयप्रकाश के अनुसार सम्पूर्ण क्रांति के माध्यम से प्रस्थापित राजनीतिक प्रणाली अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति जनता की चेतना पर आधारित होगी तथा वह जनता में ऐसी सामर्थ्य उत्पन्न कर देगी, जिसके माध्यम से वह सत्ता के दुरूपयोग, राजनैतिक संकीर्णताओं, भ्रष्टाचार व स्वार्थ–साधन का प्रभावी प्रतिरोध कर कसे।[22]

समग्र क्रांति का सांस्कृतिक संदर्भ

जयप्रकाश नारायण ने आशा पकट की कि सम्पूर्ण क्रांति एक ऐसे परिवेश को जन्म देगी जिसमें भारत की मूलभूत मानवीय और आध्यात्मिक परम्परा पुनः प्रतिष्ठित हो उन्होंने कहा कि इसके बिना 'भारत' और 'भरतीयता' की रक्षा करना कठिन होगा। उनहोंने समग्र क्रांति की प्रक्रिया में उदारता तथा सभी के हित में अपना हित खोजने की समृद्ध भारतीय संस्कृति की परम्परा की पुनः प्रतिष्ठा की आशा प्रकट की।[23] उन्होंने कहा कि एक–एक व्यक्ति के जीवन में भारत के आध्यात्म का रंग चढ़ाने वाली ऐसी क्रांति अवश्य होगी। उस स्थिति में व्यक्ति समाज के हित में अपना हित देखेगा। व्यक्ति समाज के लिए जीयेगा और समाज व्यक्ति के लिए जीयेगा। हमारी यह अभिनव सांस्कृतिक क्रांति आरोहण की एक प्रक्रिया होगी।[24]

आर्थिक व्यवस्था तथा सांस्कृतिक जीवन के बीच कोई प्रत्यक्ष तथा अनिवार्य सम्बन्ध नहीं है। किन्तु यह भी सत्य है कि आधारभूत आर्थिक आवश्कयताओं की पूर्ति के बिना सांस्कृतिक सृजनशीलता असम्भव है इसलिए जयप्रकाश नारायण उन परिस्थितियों के निर्माण के पक्ष में थे जिसमें समान अवसर के आदर्श को साक्षात्कृत किया जा कसे। संस्कृति के फलने–फूलने के लिए न्यूनतम आर्थिक स्तर की प्राप्ति अपरिहार्य है।

जयप्रकाश नारायण विश्व समाज के आदर्श को मानते थे। उनका कहना था कि संगठित सैनिकवाद तथा समग्रवादी व्यवस्थाओं ने जो विनाश का ताण्डव मचा रखा है उकसे मुकाबले में विश्व समाज ही एशिया तथा अफ्रीका की दलित मानवता के साथ न्याय कर सकता है।[25]

निष्कर्ष

जयप्रकाश नारायण भारत के समाजवादी आन्दोलन के महत्वपूर्ण स्तम्भ रहे हैं। उन्होंने समाजवादी विचारधारा का प्रयोग एक ओर जनसाधारण को साम्राज्यवादी आधिपत्य से स्वाधीनता दिलाने के लिए और दूसरी ओर उन्हें सामन्तवादी शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए किया। उन्होंने समाजवाद के अस्त्र को भारत के स्वाधीनता संग्राम और सामाजिक क्रांति इन दोनों मोर्चों पर प्रयोग के लिए उपयुक्त बनाने का प्रयत्न किया। परन्तु इन प्रस्तावों को व्यवहारिक रूप देने के लिए जिस स्वच्छ और राजनीति की आवश्कयता है।

यद्यपि समग्र क्रांति के विचार की प्रशंसा सैद्धान्तिक आधारों पर की जा सकती है, किन्तु इसका सबसे बड़ा दोष इसकी अव्यवहाकिरता में निहित है। अभी न तो जनसमुदाय के स्तर पर मानवीय चेतना ही इतनी समृद्ध हुयी है और न बाह्य एवं भौतिक परिस्थितियां ही इतनी अनुकूल है कि समग्र क्रांति के साध्यों को समुदाय की अहिंसात्मक लोक शक्ति की मदद से प्राप्त किया जा कसे। आधुनिक परिस्थितियों में समग्र क्रांति के विचार के प्रसार अथवा इसके लिए अहिंसात्मक लोक–प्रशिक्षण की बात तो बहुत आगे की है, इन कार्यों को करने के लिए लाखों–लोकसेवकों का निर्माण ही स्वयं में अति कठिन काम है। आलोचकों का यह भी मत है कि समग्र क्रांति जिस सरल, आत्मनिर्भर एवं स्वावलम्बी स्थानीय समुदाय की स्थापना की कल्पना करती है, वह आधुनिक वैज्ञानिक, औद्योगिक एवं अन्तर्राष्ट्रवादी युग में पूर्णतः अस्वीकारणीय है; इसकी प्राप्ति के लि किया जाने वाला कोई भी प्रयत्न घड़ी की सुइयों को उल्टी दिशा में लौटाने के समान है। समग्र क्रांति विकेन्द्रीकरण एवं लोकशक्ति के नाम पर एक कमजोर राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की समर्थक है, किन्तु भारतीय इतिहास बताता है कि कमजोर केन्द्र अंत में राष्ट्र की एकता अखण्डता तथा स्वतंत्रता के लिए घातक सिद्ध होता है। यद्यपि जयप्रकाश ने समग्र क्रांति के लिए अहिंसात्मक साधनों का ही समर्थन किया है, किन्तु जाति वर्ग भाषा आदि के तनावों व संघर्षों से पीड़ित तथा पृथकतावाद व आतंकवाद के संकट से जूझते भारत राष्ट्र के लिए ये अहिंसात्मक साधन भी गंभीर खतरे उत्पन्न कर सकते हैं।

जयप्रकाश के चिन्तन में विद्यमान आदर्शवादी स्वर भी कतिपय आलोचकों के मत में उनके चिन्तन को अव्यवहारिक बना देता है किन्तु यह आलोचना न्याय सम्मत प्रतीत नहीं होती। वस्तुतः उनके चिनतन में आदर्श का आग्रह तथा वर्तमान व्यवस्था की विकृतियों को शनैः शनैः दूर करने का सुधारवादी स्वर एक साथ मुखरित होता है। राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक व नैतिक प्रश्नों पर उन्होंने विद्यमान विकृतियों की सजग समीक्षा ही नहीं की अपितु आदर्श व्यवस्था का वैकल्पिक प्रतिमान भी प्रस्तुत किया। भारतीय राजनीति प्रणाली में विकृतियों की उन्होंने प्रखर आलोचना ही नहीं की, वरन् उनमें सुधार के लिए ठोस योजना व कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया ऐसे समय में जबकि पूंजीवादी व साम्यवादी आर्थिक पद्धतियों की विफलता निर्विवाद रूप से सिद्ध हो गई है; तथा केन्द्रीकृत राजनीतिक संस्थाएं – मानव के कल्याण के लक्ष्य की प्राप्ति में असमर्थ व समयाग्रस्त प्रतीत हो रही है – 'लोक स्वराज्य' की जयप्रकाश की धारणा एक विचारणीय विकल्प है। चिन्तन के प्रत्येक स्तर में विद्यमान उनका मानवतावादी आग्रह उनके चिन्तन के सार्वभौमिक महत्व को प्रस्थापित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जयप्रकाश सम्पादित नारायण देसाई, पृष्ठ 586
2. उपर्युक्त, पृष्ठ 591
3. उपर्युक्त, पृष्ठ 591
4. उपर्युक्त, पृष्ठ 591
5. उपर्युक्त, पृष्ठ 588
6. उपर्युक्त, पृष्ठ 588
7. उपर्युक्त, पृष्ठ 588, 89
8. उपर्युक्त, पृष्ठ 590

9. उपर्युक्त, पृष्ठ 590
10. उपर्युक्त, पृष्ठ 590
11. उपर्युक्त, पृष्ठ 586
12. उपर्युक्त, पृष्ठ 586
13. उपर्युक्त, पृष्ठ 586–87
14. उपर्युक्त, पृष्ठ 587
15. उपर्युक्त, पृष्ठ 587
16. जयप्रकाश नारायण का 1940 की रामगढ़ कांग्रेस में प्रस्तुत प्रस्ताव
17. जयप्रकाश नारायण, ज्वूंतकै.जतनहहसमए पृष्ठ 90, 260, यसुफ मेहर अली द्वारा सम्पादित, पद्मा पब्लिकेशन्स, बम्बई, 1946
18. उपर्युक्त, पृष्ठ 92
19. उपर्युक्त, पृष्ठ 92
20. जयप्रकाश नारायण का सभापित के रूप में दिया गया भाषण (मार्च 28, 1951) Indian Congress for Culcutral Freedom, पृष्ठ 37 (बम्बई, द रनाडे प्रेस, 1951)
21. जयप्रकाश (सम्पादित) नारायण देसाई आदि, पृष्ठ 593
22. उपर्युक्त, पृष्ठ 593
23. उपर्युक्त, पृष्ठ 593
24. उपर्युक्त, पृष्ठ 593
25. जयप्रकाश नारायण का सभापित के रूप में दिया गया भाषण (मार्च 28, 1951) Congress for Cultural Freedom, पृष्ठ 39 (बम्बई द रानाड़े प्रेस, 1951)

❖◆❖